उच्च शिक्षित नौकरी पेशा महिलाओं में गृह–प्रबंधन की समस्या एवं समाधानः एक अध्ययन

दयावंत दशोरा उपाध्याय[1], डॉ. रेखा गुप्ता[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, रबिन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

[2]डीन, शिक्षा विभाग, रबिन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश

बदलते समय में महिलाएं आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक रूप से सशक्त तथा आत्मनिर्भर बन रही है। उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है। इसके अलावा अगर कुछ नहीं बदला तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी। खाना बनाना और बच्चों की देखभाल करना अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। अर्थात अब महिलाओं को दो तरह जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है। घरेलू महिलाओं की अपेक्षा नौकरी पेशा महिलाओं पर काम का दबाव अत्यधिक है, इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर दोनों को सँभालने के लिए कठोर मेहनत करनी पड़ रही है। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि शिक्षण सेवा क्षेत्र ने महिलाओं को अत्याधिक आकृष्ट किया है। तय अवधि तक कार्य, दृढ़ नियम, राजनैतिक दखलंदाजी का अभाव, सापेक्ष सुरक्षा आदि ऐसे कारक है जिससे महिलाओं का आकर्षण शिक्षण क्षेत्र की तरफ बढ़ा रहा है। लेकिन कार्य की अनुकूलता और सम्मान जनक वेतन के साथ–साथ महिलाओं से जुड़ी शिक्षा का स्तर और पारिवारिक स्थिति आदि कारक महिलाओं के समक्ष कार्य और परिवार का दोहरा दबाव उपस्थित करते है। नौकरी पेशा महिलायें अर्जित एवं प्रदत्त मूल्य तथा भूमिका के बीच की किस प्रकार सामंजस्य करती है? प्रस्तुत अध्ययन इसी तथ्य के उत्तर की खोज करने का प्रयास है।

मुख्यबिन्दु–उच्च शिक्षित, नौकरी पेशा महिलाऐं, गृह–प्रबंधन

I प्रस्तावना

नौकरी पेशा महिलाएं दो तरह की जिम्मेदारी निभाती हैं, घर को भी संभालती हैं और उच्च पदों का कार्य भी पूरी निष्ठा से कर रही हैं। जिसमें वे पुरुष वर्ग से बहुत ही आगे हैं। मां पुत्रों को संस्कार दें जिससे वे सभी महिलाओं को सम्मान दे सकें और अपने अच्छे कार्य से समाज को कुछ संदेश दें। इस अध्ययन का उद्देश्य उन्नत डिग्री वाली विवाहित भारतीय महिलाओं में कैरियर के उद्देश्यों को पहचानना और वर्गीकृत करना था। पच्चीस उच्च शिक्षित महुवा जिला भावनगर गुजरात की नौकरी पेशा महिलाओं का गूगल फॉर्म द्वारा प्रश्नावली के माध्यम द्वारा पूछा गया कि उन्होंने कई चुनौतियों होने के बावजूद नौकरी करना क्यों चुना। नौकरी पेशा महिलाओं के परिवार का स्वरुप, महिलाओं के कार्यरत होने के उत्तरदायी कारण,महिलाओं में वर्तमान नौकरी से संतुष्टि, गृह– प्रबंधन में पुरुषों की भागीदारी, महिलाओं द्वारा परिवाओं के साथ सामंजस्य, महिलाओं की वार्षिक आय आदि प्रश्न प्रश्नावली के माध्यम से पूछे गए। यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं के नौकरी पेशा को जारी रखने के फैसले को प्रभावित करने वाले एक प्रमुख कारक के रूप में कैरियर की दृढ़ता को अवधारणा बनाता है और भविष्य के अध्ययन के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

II साहित्यिक समीक्षा

वर्षा कुमारी द्वारा ओड़िसा राज्य के राउरकेला शहर क्षेत्र के उद्धमों, बैंक, स्कुल व कोलेजों में कार्यरत महिलाओं जैसे विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं और चुनैतियों का अध्ययन किया गया। अध्ययन में पाया कि विभिन्न आयु–वर्ग में एवं विशेष वर्ग की महिलाओं तथा विभिन्न श्रेणियों में कार्यरत जैसे अविवाहित महिलाएं, विवाहित महिलाएं, तलाक़शुदा महिलाएं और परितयक्ता महिलाओं की समस्याओं व चुनौतियों में विभिन्नता पायी जाती है। लेकिन इनके साथ ही निश्चित रूप में सामान्य तरह की समस्याओं जैसे शारीरिक व मानसिक तनाव, नौकरी व परिवार के बीच उचित संतुलन की समस्या परिवार की देखभाल व् कार्यस्थल पर भेदभाव आदि का सामना करना पड़ता है।

सिन्हा रनाड़े (1976) सिंध एवं साड़े ने दिल्ली व बिहार की कामकाजी महिलाओं के सरकारी योजना के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए, उन्होंने पाया कि महिला कर्मचारियों के स्वास्थ, उनकी भर्ती, इनके काम की स्थिति, काम के प्रकार और आर्थिक स्थिति के बारे में कोई अच्छा ध्यान नहीं दिया जाता उनके अनुसार महिला कर्मचारियों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति अच्छी नहीं थी।

सी. एम् पालविया और वी. जगन्नाथ (1978) ने उत्तर प्रदेश के (कावल गॉव) में आर्थिक रूप से शोषित महिलाएं जो ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, उनका जीवन वास्तव में चिंताजनक है, क्योंकि उनको काम के लिए काफ़ी दूर तक जाना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं के बारे में अपना शोध प्रस्तुत किया, कि जिस कारण वे परिवार को उचित समय नहीं दे पाती। जिस कारण परिवार की सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवेश पर सीधा नकारात्मक असर पड़ता है। **शोभा उपाध्याय, सौम्या पण्डित** का अध्ययन मध्यम वर्ग की कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका, व्यवसायिक व् सामाजिक भूमिका के अंतर्संबंध पर केन्द्रित है। अध्ययन में पाया गया कि मध्यम वर्ग की महिलाएं अपने पारिवारिक जीवन स्तर को ऊचा उठाने के लिए कार्य करती है तथा महिलाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं के निर्वाह के फलस्वरूप पारिवारिक जीवन में दबाव एवं तनाव में वृद्धि हुई है।

III अध्ययन के उद्देश्य

(क) नौकरी पेशा महिलाओं की नौकरी संतुष्टि विषयक तथ्यों का विश्लेषण करना।

(ख) नौकरी पेशा महिलाओं की दोहरी भूमिका निभाने के करना उत्पन्न अन्त द्वंद्व की स्थिति को ज्ञात करना।

(ग) नौकरी पेशा महिलाओं में गृह–प्रबंधन की समस्या एवं समाधान को ज्ञात करना।

IV शोध प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। अध्ययन गुजरात के भावनगर जिले के महुवा शहर के शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत अनेक शिक्षण संस्थाओं में से 25 महिला शिक्षकों का अध्ययन साक्षात्कार अनुभूति द्वारा किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के प्राप्त किये गये आकड़ों को तालिकाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

V विश्लेषण

तालिका– 1

महिलाओं की शिक्षा

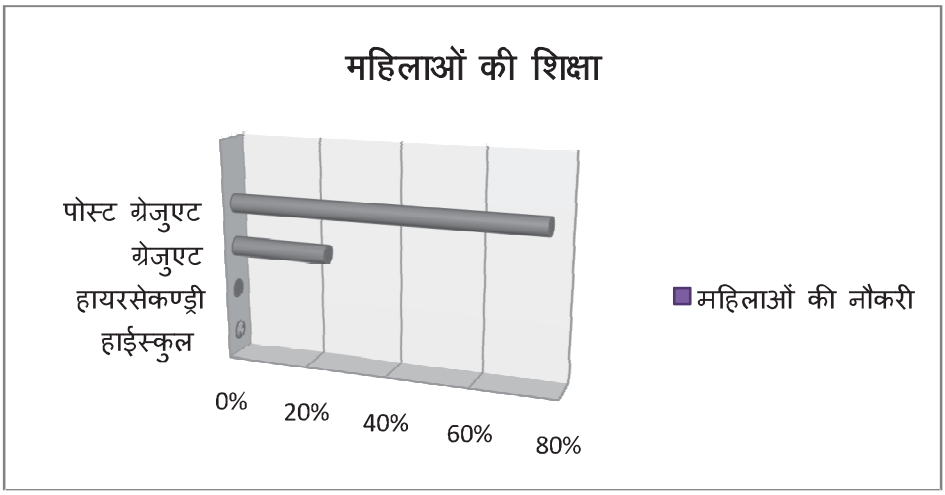

तलिका–1

उपरोक्त ऑनलाइन सर्वे महुवा गुजरात की उच्च शिक्षित नौकरी पेशा 25 महिलाओं को गूगल फॉर्म के माध्यम से उनकी शिक्षा के बारे में पूछा गया। जिसमें हाई स्कुल तथा हायर सेकण्ड्री की शिक्षा तक कोई महिला नौकरी पेशा नहीं थी। सबसे अधिक 76% महिलायें पोस्ट ग्रेजुएट तथा 24% महिलायें ग्रेजुएट नौकरी पेशा है। अतार्थ महुवा गुजरात में महिलायें शिक्षा के प्रति सर्वाधिक जागरूक है और नौकरी करती है।

तालिका– 2
महिलाओं की नौकरी

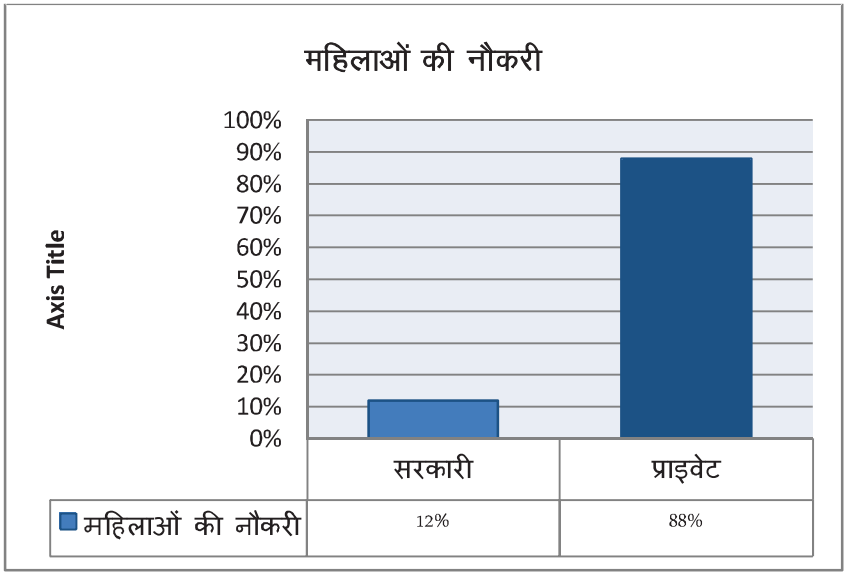

तालिका– 2
उपरोक्त प्रश्न महिलाओं की नौकरी के विषय में पूछा गया । उच्च शिक्षित 88% महिलाऐं प्रायवेट तथा 12% महिलाऐं सरकारी नौकरी पेशा है। इससे यह ज्ञात होता है कि महिलाओं का अधिक रुझान प्राइवेट नौकरी करने पर है। सरकारी नौकरी पर यहाँ की महिलाओं का रुझान बहुत कम हैं।

तालिका–3
महिलाओं का ऑफिस टाइम

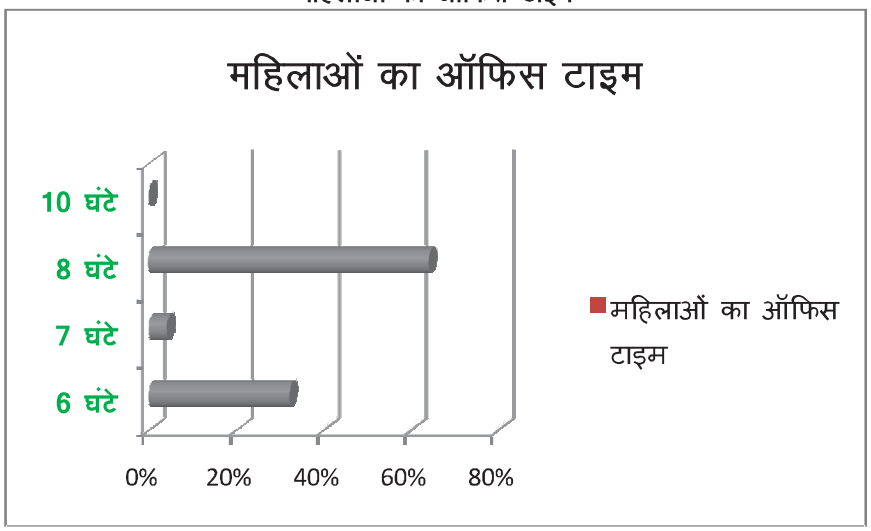

तालिका– 3 के अनुसार महिलाओं से उनके ऑफिस टाइम के बारे में पूछा गया। इस प्रश्न के उत्तर में 62: महिलायें 8 घंटे, 32% महिलायें 6 घंटे, 4% महिलायें 7 घंटे कार्य करती है अर्थात 62 प्रतिशत महिलायें सर्वाधिक 8 घंटे नौकरी पेशा कार्य करती है।

तालिका– 4
महिलाओं की आयु

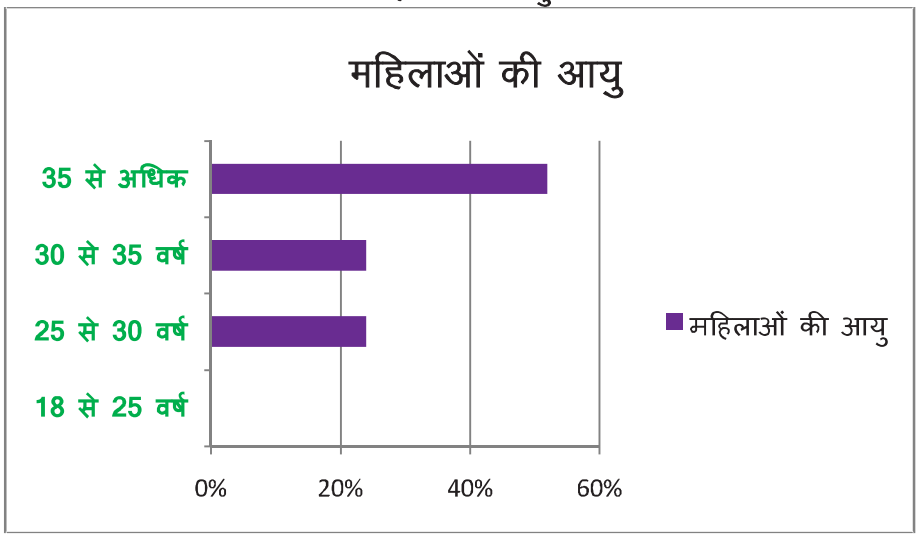

तालिका–4 के अनुसार 52% महिलायें जिनकी आयु 35 वर्ष से अधिक है वे सर्वाधिक नौकरी कर रही है क्रमशः 24%-24% महिलायें 30 से 35 वर्ष तथा 25 से 30 वर्ष की आयु की महिलायें भी नौकरी पेशा अपनाएं हुए है। वर्तमान में 18 से 25 वर्ष की महिलायें नौकरी नहीं करती हैं।

तालिका– 5
नौकरी पेशा महिलाओं के परिवार का स्वरुप

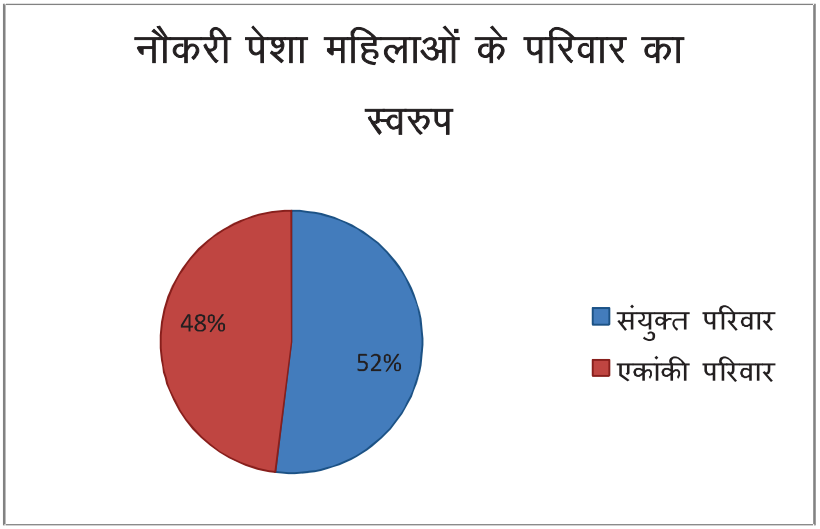

तालिका– 5
महिलाओं से उनके परिवार के स्वरुप के बारे में पूछा गया है। 52% महिलायें संयुक्त परिवार के साथ रहती है तथा वे नौकरी भी करती हैं। 48% महिलायें केवल एकाकी परिवार में रहकर नौकरी करती है।

तालिका– 6
महिलाओं के कार्यरत होने के कारण

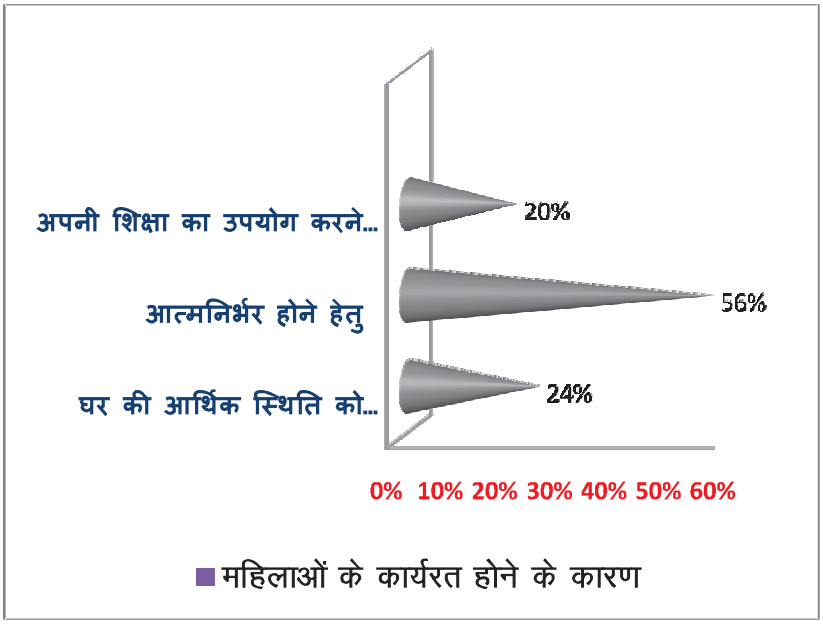

तालिका– 6

महिलाओं से यह पूछा गया कि उनकी नौकरी करने का क्या कारण है। इसके प्रतिउत्तर में 56% महिलाओं ने कहा कि वे आत्मनिर्भर होना चाहती है अतार्थ परिवार पर बोझा नहीं बनना चाहती है। 24% महिलाओं ने कहा कि वे घर की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु यह नौकरी कर रही है जिससे परिवार को आर्थिक स्थिरता प्राप्त हो। 20% महिलायें अपनी उच्च शिक्षा का उपयोग करने हेतु नौकरी कर रही है।

तालिका–7
महिलाओं में वर्तमान नौकरी से संतुष्टि

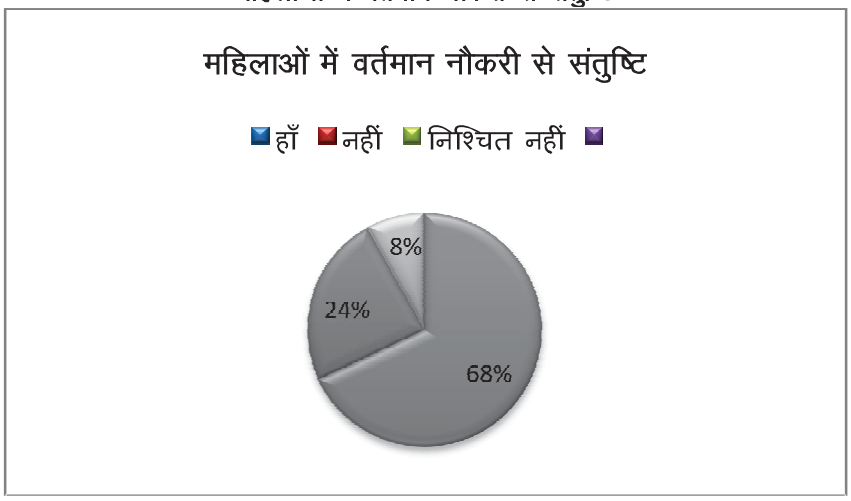

तालिका– 7

जब महिलाओं से पूछा गया कि वे उनकी नौकरी से संतुष्ट है इसके प्रति उत्तर में 68%महिलाओं ने कहा कि वे अपनी नौकरी से संतुष्ट है। 24% महिलाओं ने कहा कि वे अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं है। और 8% महिलाओं का उत्तर निश्चित नहीं था अर्थात वे असमंजस में थीं।

तालिका–8
गृह–प्रबंधन में पुरुषों की भागीदारी

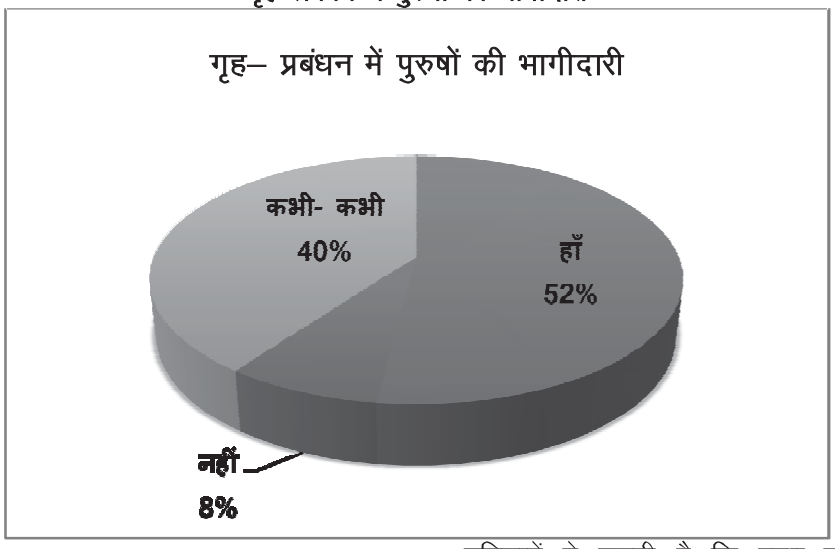

तालिका– 8
महिलाओं से गृह–प्रबंधन में पुरुषों कि भागीदारी से सम्बंधित महत्वपूर्ण प्रश्न किया गया। 52% महिलाओं ने कहा कि गृह –प्रबंधन में पुरुषों द्वारा बहुत सहायता मिलती है जिसकी वजह से वे नौकरी कर पा रही है। 40% महिलायें ये कहती है कि पुरुष वर्ग कभी– कभी ही गृह–प्रबंधन में सहायता देते है। 8% महिलाओं ने कहा कि हमारे घर के पुरुष हमें गृह–प्रबंधन में कोई सहायता नहीं करते है।

तालिका– 9
महिलाओं द्वारा परिवारों के साथ सामंजस्य

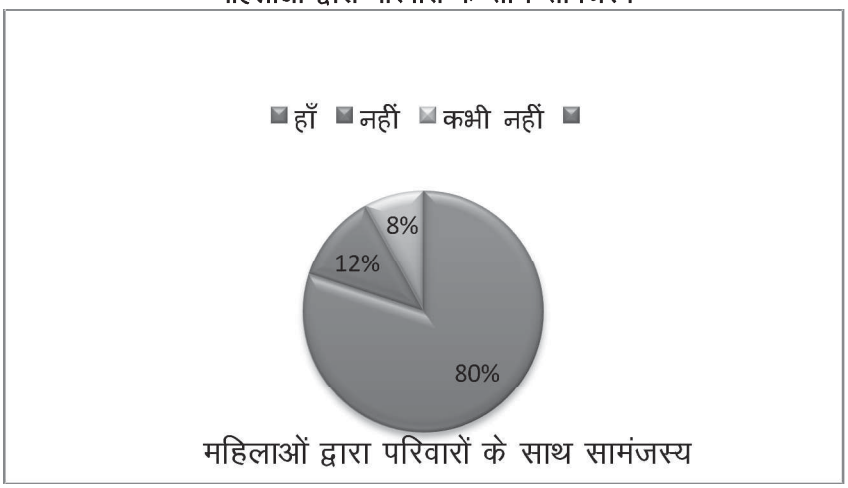

तालिका– 9
महिलाओं से पूछा गया कि क्या वे परिवारों के मध्य सामंजस्य स्थापित कर पाती हैं? इसके प्रतिउत्तर में 80% महिलाओं ने कहा कि वे नौकरी के साथ परिवारों को बहुत ही आसानी से सामंजस्य स्थापित कर लेती है। 12% महिलायें नौकरी के साथ परिवारों के मध्य सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती है। 8% महिलाओं ने कहा कि वे कभी–कभी ही परिवारों के बिच सामंजस्य स्थापित कर पाती है।

तालिका–10
नौकरी पेशा महिलाओं की वार्षिक आय

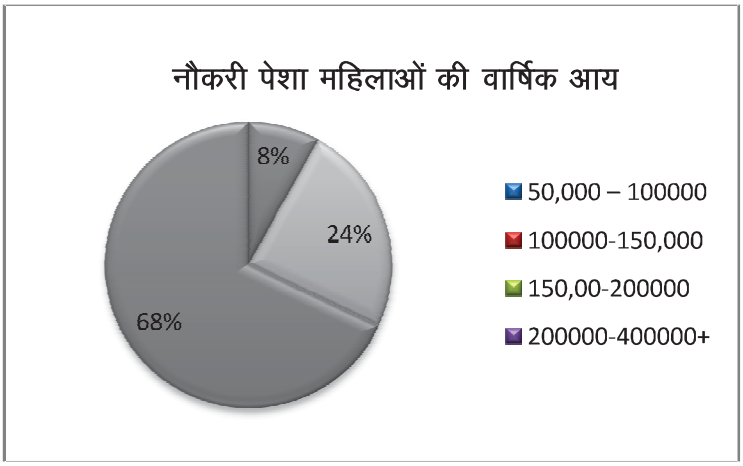

तालिका–10
नौकरी पेशा महिलाओं से अंतिम प्रश्न पूछा गया कि उनकी वार्षिक आय कितनी है। इसके प्रतिउत्तर में 68% महिलाओं ने कहा की वे वार्षित 2 लाख से 4 लाख या उससे अधिक भी कमा लेती है। 24% महिलाओं ने कहा की वे 1 लाख 50 हज़ार से 2 लाख तक कमाती हैं केवल 8% प्रतिशत उच्च शिक्षित महिलाएं 50 हज़ार से 1 लाख तक कमाती है। केवल कुछ ही महिलाओं को उनकी उच्च शिक्षा के हिसाब से तनख्वाह नहीं मिलती है।

VI निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च शिक्षित नौकरी पेशा महिलाओं में गृह–प्रबंधन की समस्या एवं समाधानः एक अध्ययन से सम्बंधित प्रश्न के उत्तर में पाया कि नौकरी पेशा महिलाओं पर नौकरी का उत्तरदायित्व बढ़ा देने के बावजूद उनकी पारंपरिक भूमिका में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। किन्तु ये तथ्य भी सामने आया हैं कि वर्तमान युग में पुरुष तथाकथित स्त्रियोचित कार्य करने में शर्म महसूस नहीं करते तथा वे गृह–प्रबंधन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। वर्तमान में महिलाएं संयुक्त परिवारों से निकलकर, एकांकी परिवार में रहना चाहती है। ये एकाकी परिवारों की स्थापना कर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना और पारिवारिक मामलो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहती है। संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि महिलाओं का स्थान पुरुषों के समान महत्वपूर्ण है, अतः उनकी प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता है।

VII सुझाव

(क) भारत का सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य नौकरी पेशा महिलाओं को उचित व्यावसायिक वातावरण उपलब्ध नहीं करता। अतः सुझाव है कि सार्वजानिक निजी प्रतिष्ठानों में महिला सुरक्षा और आत्म सम्मान से जुडी आधारभूत प्रणाली का विकास किया जाये तथा संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यावसायिक संतुष्टि हेतु उन्हें कार्य के अनुकूल वेतन मिलना चाहिये।

(ख) नौकरीपेशा महिलाओं की स्थिति में सुधार क्रियान्वित करने की दिशा में अनेक प्रयास करने चाहिए, जैसे प्रत्येक क्षेत्र में उनकी हिस्सेदारी व् महिलाओं की नेतृत्वकारी भूमिका में वृद्धि करना। महिलाओं पर हो रही किसी भी प्रकार की हिंसा, उसका अंत कर उन्हें शांति के प्रत्येक पहलू और सुरक्षा सबंधी तमाम प्रक्रियाओं में सम्मिलित किया जाये।

अतः महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र एवं समाज में होने वाली असुविधा को स्वयं दूर करना होगा। इनके द्वारा ऐसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण किया जाना चाहिए। जिसके द्वारा वे समानता के स्तर पर आ सकें और समाज में स्वतंत्र नागरिक की भांति अपने अधिकारों एवं अवसरों का प्रयोग कर सकें।

सन्दर्भ सूची

[1] रानी कला (1976)– रोल कम्ब्लिक्त इन वर्किंग वीमेन, चेतना पब्लिकेशन, नई दिल्ली

[2] सिंह के. पी. – "कैरियर ऑफ़ फॅमिली वीमेन टू वर्क्सः ए स्टडी इन रोल कोम्प्लिक्ट" इण्डियन जर्नल ऑफ़ सोशलवर्क, मुंबई

[3] सेकर एण्ड स्मिथ (1962) मैरिड वीमेन वर्कर्स, जोर्ज एलेन एण्ड अनविन, लन्दन

[4] नन्दा, बी. आर. (1976) – इण्डियन वीमेन, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. दिल्ली

[5] सेनगुप्ता, पी. (1960) – वीमेन वर्कर्स ऑफ़ इन्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई